International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Special Issue on Advancements of Emerging Trends in Multidisciplinary Analysis and Research
Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

उदयपुरवाटी उपखंड में धरातलीय एवं भूमिगत जल प्रबंधन की महत्ता

Rampal Singh

Research Scholar, Department of Geography, University of Rajasthan, Jaipur, Rajasthan, India

सार

उदयपुरवाटी भारत के राजस्थान राज्य के नीम का थाना में एक छोटा सा शहर और एक नगर पालिका है। नीम का थाना, सीकर, श्री माधोपुर खंडेला और नीम का थाना उदयपुरवाटी के पास कुछ और विकसित शहर हैं। उदयपुरवाटी (उदयपुरवाटी) राजस्थान के नीम का थाना जिले में एक शहर और तहसील है। हर्ष शिलालेख 961 ई.

परिचय

उदयपुरवाटी (Udaipurwati) भारत के राजस्थान राज्य के शेखावाटी क्षेत्र के नीमकाथाना जिले में स्थित एक नगर और नगरपालिका है।[1][2]

इतिहास

राजा भोजराज सिंह जी (शेखावत) उदयपुरवाटी के शासक थे। वह एक अच्छे और बहादुर राजा और भोजराज जी का शेखावत के पूर्वज थे। राजा भोजराज ने उदयपुरवाटी (साथ ही 45 गांव जिन्हें पैनतालीसा कहा जाता था) अपने पिता रायसल राजा दरबारी से जागीर के रूप में प्राप्त किया। गांव को पहले कौसाम्बी के रूप में जाना जाता था, बाद में नाम बदलकर उदयपुरवाटी कर दिया गया। उदयपुरवाटी के 45 गांवों को पैनतालीसा के रूप में जाना जाता था। पैनतालीसा के प्रसिद्ध गांव झज्जर, भोजगढ, धामोरा खिरोद, चिड़ावा, घुडागौड़ जी अडवाना इतयादी थे।

जनसांख्यिकी[1,2,3]

2001 तक भारत की जनगणना के अनुसार उदयपुरवाटी की आबादी 27,831 थी। पुरुषों की संख्या 52% और महिलाओं की संख्या 48% है। उदयपुरवाटी की औसत साक्षरता दर 56% थी जो राष्ट्रीय औसत 59.5% की तुलना में कम है: पुरुष साक्षरता 69% और महिला साक्षरता 43% है। उदयपुरवाटी में 19% जनसंख्या 6 वर्ष से कम उम्र की है।[3]

लोहार्गल भारत के राजस्थान राज्य में शेखावाटी इलाके के झुन्झुनू जिले से 70 कि॰मी॰ दूर आड़ावल पर्वत की घाटी में बसे उदयपुरवाटी कस्बे से करीब दस कि॰मी॰ की दूरी पर स्थित है। लोहार्गल का अर्थ है- वह स्थान जहाँ लोहा गल जाए। पुराणों में भी इस स्थान का जिक्र मिलता है। नवलगढ़ तहसील में स्थित इस तीर्थ 'लोहार्गल जी' को स्थानीय अपभ्रंश भाषा में लुहागरजी कहा जाता है। झुन्झुनू जिले में अरावली पर्वत की शाखायें उदयपुरवाटी तहसील से प्रवेश कर खेतड़ी, सिंघाना तक निकलती हैं, जिसकी सबसे ऊँची चोटी 1051 मीटर लोहार्गल में है।[उद्धरण चाहिए]

तीर्थराज लोहार्गल में अनेक मंदिर है, और अपने आप में हर मंदिर की अपनी महिमा है, कोई मंदिर विशेष नहीं है और ना ही कोई मंदिर आम है,इन सब मंदिरों व गौमुख तथा वादियों को मिलाकर ही संपूर्ण लोहार्गल बनता है। आम श्रद्धालुओं के लिए सभी मंदिर प्रमुख है। बाबा मालकेतु की परिक्रमा जब 24 कोस (72 km) में लगती है तो फिर ये कैसे किसी का निजी क्षेत्र हो सकता है।

भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को गोगा नवमी मनाई जाती है, इसी दिन से परिक्रमा प्रारंभ हो कर अमावस्या को सम्पूर्ण होती है,

पांडवों की प्रायश्चित स्थली

महाभारत युद्ध समाप्ति के पश्चात पाण्डव जब आपने भाई बंधुओं और अन्य स्वजनों की हत्या करने के पाप से अत्यंत दुःखी थे, तब भगवान श्रीकृष्ण की सलाह पर वे पाप मुक्ति के लिए विभिन्न तीर्थ स्थलों के दर्शन करने के लिए गए। श्रीकृष्ण ने उन्हें बताया था कि जिस तीर्थ में तुम्हारे हथियार पानी में गल जाए वहीं तुम्हारा पाप मुक्ति का मनोरथ पूर्ण होगा। घूमते-घूमते पाण्डव लोहार्गल आ पहुँचे तथा जैसे ही उन्होंने यहाँ के सूर्यकुण्ड में स्नान किया, उनके सारे हथियार गल गये। उन्होंने इस स्थान की महिमा को समझ इसे तीर्थ राज की उपाधि से विभूषित किया। लोहार्गल से भगवान परशुराम का भी नाम जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि इस जगह पर परशुराम जी ने भी पश्चाताप के लिए यज्ञ किया तथा पाप मुक्ति पाई थी। विष्णु के छठें अंशअवतार ने भगवान परशुराम ने क्रोध में क्षत्रियों का संहार कर दिया था, लेकिन शान्त होने पर उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ। यहाँ एक विशाल बावड़ी भी है जिसका निर्माण महात्मा चेतनदास जी ने करवाया था। यह राजस्थान की बड़ी बावड़ियों में से एक है। पास ही पहाड़ी पर एक प्राचीन सूर्य मन्दिर बना हुआ है। इसके साथ ही वनखण्डी जी का मन्दिर है। कुण्ड के पास ही प्राचीन शिव मन्दिर, हनुमान मन्दिर तथा पाण्डव गुफा स्थित है। इनके अलावा चार सौ सीढ़ियाँ चढने पर मालकेतु जी के दर्शन किए जा सकते हैं।

[लोहार्गल का वराह मंदिर] लोहार्गल धाम के प्रमुख मंदिरों में भगवान विष्णु के तृतीय अवतार श्रीवराह का मंदिर विशेष है,भगवान विष्णु ने अब तक 23 अवतार लिए हैं। जिनमें से एक है वराह अवतार। हर साल भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को वराह जयंती मनाई जाती है। यह भगवान विष्णु का मानवीय शरीर में धरती पर पहला अवतार था। इस अवतार में भगवान विष्णु ने शरीर मानवीय लिया था, जबकि उनका मुख वराह के समान था। इसीलिए इस अवतार को वराह अवतार कहा गया। प्राचीन शास्त्रों में यह कहा गया है कि विष्णु जी ने यह अवतार दैत्य हिरण्याक्ष का वध करने के लिए लिया था। वराह जयंती का इतिहास हिरण्याक्ष नाम का एक दैत्य था। उसे पूरी पृथ्वी पर शासन करने की इच्छा थी। इसलिए वह पृथ्वी को लेकर समुद्र में जाकर छिप गया। पृथ्वी को डूबता देख सभी देवी देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की कि – हे भगवन् आप पृथ्वी को डूबने से बचा लीजिए। क्योंकि इस पर ही संपूर्ण मानव समाज को अपना जीवन बिताना है। अगर पृथ्वी नहीं होगी तो मानव सभ्यता नहीं बचेगी। इसलिए[4,5,6] हे करुणानिधान दीनों पर कृपा कर पृथ्वी को बचाइए। सभी देवताओं की पुकार सुन भगवान विष्णु ने वराह अवतार लिया। यह अवतार भगवान के अन्य अवतारों से बहुत अलग था। सभी देवी देवताओं ऋषि-मुनियों ने उन्हें इस रूप में देखकर उनकी स्तुति की। साथ ही प्रार्थना की कि वह हिरण्याक्ष से पृथ्वी को छुड़ाकर उसका वध कर दें। ताकि जीवों को दैत्यों के अत्याचार सहने के लिए मजबूर न होना पड़े। विष्णु जी ने वराह अवतार लेकर समुद्र में छुपे हिरण्याक्ष को ढूंढा। जब उससे पृथ्वी लेने लगे तो उसने युद्ध के लिए भगवान वराह को ललकारा। दैत्य हिरण्याक्ष की ललकार सुनकर भगवान विष्णु को क्रोध आया। भगवान वराह और दैत्य हिरण्याक्ष में भीषण युद्ध छिड़ा। जिसके बाद उन्होंने हिरण्याक्ष का वध कर दिया। भगवान वराह समुद्र से पृथ्वी को अपने दातों पर रखकर बाहर ले आए और पृथ्वी की पुनर्स्थापना की। वराह जयंती का महत्व वराह जयंती के दिन भगवान विष्णु के भक्त यानी वैष्णव उनकी पूजा आराधना करते हैं। इस दिन वराह भगवान की स्तुति की जाती है। साथ ही कुछ लोग इस दिन भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए व्रत भी करते हैं। भगवान विष्णु के इस अवतार को बहुत अनूठा माना जाता है।

मान्यता है। जो कोई वराह जयंती के दिन भगवान विष्णु की पूजा आराधना करता है। उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। वह मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त करता है।

सूर्यकुंड व सूर्य मंदिर की कहानी

यहां प्राचीन काल से निर्मित सूर्य मंदिर लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। इसके पीछे भी एक अनोखी कथा प्रचलित है। प्राचीन काल में काशी में सूर्यभान नामक राजा हुए थे, जिन्हें वृद्धावस्था में अपंग लड़की के रूप में एक संतान हुई। राजा ने भूत-भविष्य के ज्ञाताओं को बुलाकर उसके पिछले जन्म के बारे में पूछा। तब विद्वानों ने बताया कि पूर्व के जन्म में वह लड़की मर्कटी अर्थात बंदरिया थी, जो शिकारी के हाथों मारी गई थी। शिकारी उस मृत बंदरिया को एक बरगद के पेड़ पर लटका कर चला गया, क्योंकि बंदरिया का मांस अभक्ष्य होता है। हवा और धूप के कारण वह सूख कर लोहार्गल धाम के जलकुंड में गिर गई किंतु उसका एक हाथ पेड़ पर रह गया। बाकी शरीर पवित्र जल में गिरने से वह कन्या के रूप में आपके यहाँ उत्पन्न हुई है। विद्वानों ने राजा से कहा, आप वहां पर जाकर उस हाथ को भी पवित्र जल में डाल दें तो इस बच्ची का अंपगत्व समाप्त हो जाएगा। राजा तुरंत लोहार्गल आए तथा उस बरगद की शाखा से बंदरिया के हाथ को जलकुंड में डाल दिया। जिससे उनकी पुत्री का हाथ स्वतः ही ठीक हो गया। राजा इस चमत्कार से अति प्रसन्न हुए। विद्वानों ने राजा को बताया कि यह क्षेत्र भगवान सूर्यदेव का स्थान है। उनकी सलाह पर ही राजा ने हजारों वर्ष पूर्व यहां पर सूर्य मंदिर व सूर्यकुंड का निर्माण करवा कर इस तीर्थ को भव्य रूप दिया।

एक यह भी मान्यता है, भगवान विष्णु के चमत्कार से प्राचीन काल में पहाड़ों से एक जल धारा निकली थी जिसका पानी अनवरत बह कर सूर्यकुंड में जाता रहता है। इस प्राचीन, धार्मिक, ऐतिहासिक स्थल के प्रति लोगों में अटूट आस्था है। भक्तों का यहाँ वर्ष भर आना-जाना लगा रहता है। यहाँ समय समय पर विभिन्न धार्मिक अवसरों जैसे ग्रहण, सोमवती अमावस्या आदि पर मेला लगता है किंतु प्रतिवर्ष कृष्ण जन्माष्टमी से अमावस्या तक के विशाल मेले का विशेष महत्व है जो पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र रहता है। इस अमावस्या को मेले के कारण जिला कलेक्टर की ओर से जिले में अवकाश भी घोषित किया जाता है। श्रावण मास में भक्तजन यहाँ के सूर्यकुंड से जल से भर कर कांवड़ उठाते हैं। यहां प्रति वर्ष माघ मास की सप्तमी को सूर्यसप्तमी महोत्सव मनाया जाता है, जिसमें सूर्य नारायण की शोभायात्रा के अलावा सत्संग प्रवचन के साथ विशाल भंडारे का आयोजन किया जाता है। यहाँ चौबीस कोस की परिक्रमा भी की जाती है। परिक्रमा के बाद नर-नारी कुण्ड में स्नान कर पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं। जय सूर्य देव

आसपास के तीर्थ

- शाकम्भरी देवी माता का यह मंदिर लोहार्गल के पास सकराय गाँव मे है। यह मंदिर शक्रा अथवा शंकरा देवी का है। मंदिर मे ब्रह्माणी और रूद्राणी देवियों की प्रतिमाएँ है। किंतु वर्तमान मे शंकरा देवी को शाकम्भरी देवी कहा जाने लगा। वैसे भारत मे शाकम्भरी देवी का सबसे प्राचीन शक्तिपीठ उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले की पहाडियों मे है। एक अन्य मंदिर राजस्थान के ही साम्भर मे है। सकराय मे भी शाकम्भरी माता का ये स्थान है।

विचार-विमर्श

राजस्थान के गांवों में समस्याएं तो आपने देखी होगी पर उदयपुर जिले की एक एेसी पंचायत हैं जिसके पांच गांव तीन जिलों की [1,2]सीमाओं में फंसे हैं। इन्हें कोई अपना नहीं मानता। गांवों में अब तक बल्ब नहीं जल पाया। सड़क के नाम पर केवल पगडंडी है। चारपहिया वाहन तो कभी इन गांवों में आए ही नहीं। बाइक है लेकिन इसे चलाना मुश्किल क्योंकि रास्ते उबड़ खाबड़ है। मोबाइल है पर नेटवर्क नहीं आता। जिले के लसाड़िया उपखंड की भरेव पंचायत के ये पांच गांवों की दास्तां अजीब है। कहने को ये उदयपुर जिले में आते हैं और दाना-पानी यहीं से मिलता है। इनको उपचार कराने चित्तौडग़ढ़ के बांसी जाना पड़ता है क्योंकि नजदीक में कोई सरकारी अस्पताल नहीं है। खरीददारी व पढ़ाई करने धरियावद जाना पड़ता है। मतलब हर काम के लिए तीन जिलों के गांवों पर निर्भर है। उदयपुर जिले के अंतिम गांव भरेव पंचायत के धार, मायदा, कालाखेत, खोखरिया गांव के ये हालात है। इनको ग्राम पंचायत मुख्यालय पर जाने के लिए ३० किमी का सफ र तय करना पडता है। धार गांव से मुख्य सड़क करीबन ६ किमी है। लोगों को पैदल चलकर आना पडता है। दुपहिया वाहन भी बडी मुश्किल से निकलते हैं। इस मार्ग पर ट्रैक्टर से ही यात्रा की जा सकती है।

———-

10-12वीं पास नहीं मिलेगी बेटियां

सरकार का बेटियों को पढ़ाने पर जोर है लेकिन इन गांवों में १०वीं व १२वीं पढ़ी-लिखी बेटियां बहुत कम मिलेगी। इनके अभिभावक १०-१५ किमी दूर पढाई के लिए अनुमति नहीं देते हैं। पढ़ाई के लिए सरकारी स्कूल भी पूरे नहीं है। कुछ सामाजिक संस्थाएं शिक्षा की अलग जगा रही है। धार व मायदा के ग्रामीणों की लम्बे समय से आंगनवाड़ी की मांग चल रही है जो भी पूरी नहीं हुई है।

———-

सुबह के निकले पहुंचते हैं रात को

ग्रामीण रमेशचंद्र मीणा, कालूलाल मीणा, प्यारचंद मीणा व लिम्बाराम मीणा ने बताया कि रोजगार के लिए बांसी, बडीसादडी, धरियावाद, कानोड़ जाना पड़ता है। सुबह ६-७ बजे घर से निकलते हैं जो वापस रात को घर पहुंचते है। अधिकांश लोगों को पैदल ही जाना पड़ता है क्योंकि यातायात के पूरे साधन नहीं है। धार गांव में यातायात के साधनों का अभाव है।

———-

वन क्षेत्र इसलिए नहीं डली बिजली लाइन

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ज्योति योजना के अंतर्गत विद्युत लाइन वन विभाग ने अपने क्षेत्र में ले जाने की स्वीकृति नहीं दी। इस पर विधायक गौतमलाल मीणा ने घर-घर सोलर पैनल के तहत बिजली पहुंचाई परंतु ये भी ढंग से नहीं चल रहे हैं। अब खेतों में पिलाई की मोटर नहीं चलने से ग्रामीणों को डीजल पम्प में डीजल का अतिरिक्त बोझ पडता है।

———-

पहाड़ी या पर चढ़कर करते हैं बात

धार व मायदा गांवों में मोबाइल नेटवर्क नहीं आने से इन गांवों में मोबाइल खिलौना बना हुआ है। नेटवर्क नहीं आने से मोबाइल की घंटी इन गांवों में नहीं बजती है। एेसे में पहाड़ों पर या पेड़ पर चढ़कर बात करनी पड़ती है।[3,4]

गुढ़ा, उदयपुरवाटी जल संघर्ष समिति की पानी की किल्लत,पेयजल टैंकर सप्लाई, व बार बार बिजली ट्रेपिंग की नि मेंकायत को लेकर समीक्षा बैठक हुई।

वर्तमान टैंकर सप्लाई व्यवस्था की गड़बड़ी को लेकर अत्यधिक आक्रोशित व गुस्साए सभी लोगों में से ,मीटिंग में उपस्थित दीपपुरा से महावीर प्रसाद व कैलाश चंद ने कहा कि दीपपुरा में आज तक एक भी टैंकर पानी का नहीं डला, पेयजल की स्थिति अत्यंत गम्भीर है। लोगों में अत्यधिक गुस्सा व्याप्त है।

राजीवपुरा से बालू चौधरी ने कहा कि राजीवपुरा में बार बार मांग करने के बाद भी एक भी टैंकर सप्लाई सुनिश्चित नहीं हुई है ,नं ही यहां का ट्यूबवेल ठीक हुआ है।

गुडा ढहर से सरदारा राम ने कहा कि गुड़ा ढहर में भी अभी तक एक भी टैंकर पानी का नहीं डला है, ।

अधिकारी व ठेकेदार, टैंकरो वाले से मिलीभगत से झूंठी फर्जी लोकेशन ट्रेस कर टैंकर संख्या की हेराफेरी कर खानापूर्ति दर्ज करवाने का भी सभी ने आरोप लगाया है।

इंद्र सिंह पौंख व राजू ने बताया कि गांवों में ट्यूबवेल से नल द्वारा पानी सप्लाई व टंकियां बनी हुई है,कम समस्या है लेकिन गांव से बाहर ढाणियों में हर गांव में पानी की किल्लत बनी हुई है जहा अधिकार जगह न तो नल कनेक्शन है,व न ही टंकियां है, खुद के नलकुप ड्राई हो गए हैं।वहां के लिए अलग से टैंकर संख्या बढ़ोतरी कर ,पेयजल टैंकर को 2-2,4-4 ढाणियों के मध्य रोज एक -एक टैंकर ,वर्षा आने तक अलग से बढ़ोतरी कर लगाने की तुरंत आवश्यकता है।

बंशी लाल ने कहा कि 5 गांवों के लिए 2013 से ही स्वीकृत कुम्भा राम लिफ्ट योजना की डाली गई पाइपलाइन जोधपुरा से पंचलगी तक की स्वीकृति लेकर जल्दी से जल्दी पेयजल सप्लाई सुनिश्चित की जावें । जिससे इन गांवों की समस्या दूर हो सकें।

के के सैनी ने कहा कि जनवरी फरवरी में चेताने के बाऊजूद जिस तरह जयदाय विभाग की नाकामी से अभी संपूर्ण पहाड़ी क्षेत्र में पेयजल के लिए त्राहि-त्राहि मची हुई है, पहाड़ी बैल्ट में लगातार जल संकट गम्भीर होता जा रहा है, प्रभावी जल प्रबंधन हेतु मानसून आने से पूर्व ही प्राकृतिक जलस्रोतोंको संवारने व वर्षा जल संरक्षण की तैयारी सिंचाई विभाग,कृषि व भू संरक्षण विभाग के साथ मिलकर अभी से तय योजना पर काम शुरू करने की मांग की। इस क्षेत्र में परम्परागत जल स्रोत ही प्राणियों के संकट मोचक बन सकता है।

सैनी ने आगे कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में जल जीवन मिशन के तहत बनी प्रस्तावित ट्यूबवेल, पानी की टंकियां पेयजल सप्लाई से जुड़ी या नहीं ,इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।जेजेएम में घर घर नल कनेक्शन जारी करने में तेजी लानी की मांग की। सैनी ने पिछली सरकार के समय से 850 करोड़ रुपए की कुम्भा राम लिफ्ट योजना को जमीनी स्तर पर चालू करने हेतु राज्य सरकार को रिमाइंडर भिजवाने की भी मांग की।

अध्यक्ष नथू राम ने कहा कि टैंकरो में चल रही अनियमितता को संघर्ष समिति बर्दाश्त नहीं करेगी।

जेजेएम सहित तमाम ट्यूबवेलो व घटिया पाइपलाइन डालने से कई दर्जनों ट्यूबवेल को जबरदस्ती ड्राई दिखाकर, सामान निकालकर अन्यत्र शिफ्ट कर,अपनी हेराफेरी की नाकामी को छिपानी की भी जांच की मांग की।

नथू राम ने टैंकर सप्लाई ठेकेदार की मनमर्जी से विवादों में टैंकर सप्लाई की पार्दर्शिता की पूरजोर मांग की है ।

दीपपुरा, गुड़ा ढहर, राजीवपुरा, झड़ाया, अडवाणा, आदि गांवों में आज तक टैंकर सप्लाई नहीं करने पर जांच की मांग की। पूरे पहाड़ी बैल्ट में पेयजल आपूर्ति की गड़बड़ाई से आक्रोशित लोगों ने 5 दिन में पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने का समय देकर प्रशासन को चेताया है अन्यथा फिर समस्त ग्राम इकाईयों पुनः सड़कों पर धरना प्रदर्शन आंदोलन पर उतारू होंगीजिसकी समस्त जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

इस दौरान सांवर मल,बंशी लाल,भागा राम, मक्खन लाल,माला राम,रतन लाल, सरदारा राम, राजूराम, भोला राम, जीता राम,हरसा राम,बागा राम,इंद्र सिंह, कैलाश सैन, बनवारी टेलर, महावीर प्रसाद, सुभाष मेघवाल, भोला राम,माली राम शास्त्री आदि दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

परिणाम

नाम जहाज, लेकिन तरस रहा पानी को

गांव में चिकित्सा व्यवस्था के लिए ग्राम पंचायत मुख्यालय पर उप स्वास्थ्य केन्द है। मरीजों को उदयपुरवाटी व गुहाला जाकर इलाज करवाना पड़ता है । वहीं गांव में पेयजल की बड़ी समस्या है । जिसके कारण लोगों को टैंकरों या दूरदराज से पीने का पानी लाना पड़ता है। पचलंगी. राजस्थान के झुंझुनूं जिले उपखण्ड मुख्यालय उदयुपरवाटी से बीस किलोमीटर की दूरी पर अरावली की पहाडियों के मध्य सीकर – झुंझुनंू की सीमा पर जहाज गांव स्थित है। यहां कई वर्षो से भारतीय परमाणु ऊर्जा विभाग की अलग – अलग टीमें सर्वे कर रही है। सर्वे से लोगों को आस जगी है कि यहां रोजगार के नए साधन विकसित हो सकते हैं। वहीं गांव का लाल प्याज व प्याज का बीज देश – प्रदेश की मंडियों में अपना स्थान रखता है। किवदंती है कि गांव पहले एक टापू जैसी जगह पर बसा हुआ था। यातायात के रूप मे नाव व जहाज का उपयोग किया जाता था । इसलिए इस गांव का नाम जहाज रहा हुआ है। क्षेत्र के गांवों में अभी भी शादी विवाहों में जो गीत गाया जाता है। घोड़ी जहाज नगर सै आयी ओ बन्ना... यह गीत भी इसका महत्व बताता है।[5,6]

पहचान – झुंझुनूं जिले के जहाज गांव में प्राचीन काल में पहाड़ी पर बना शिव मंदिर व आदिकाल से भैरव मंदिर की मान्यता के तहत इनके वार्षिक मेले लगते हैं। महाशिवरात्रि को भगवान शिव का व आसोज के नवरात्र में सप्तमी को भैंरो जी का मेला लगता है। जिसमें आस – पास के गांवों के अलावा गांव के प्रवासी लोग भी पहुंचते हैं। कृष्ण गोशाला भी गांव की पहचान बनी हुई है।

#aao ganv chale jahaj

समस्या – अस्पताल की नहीं सुविधा

ग्राम पंचायत मुख्यालय पर बालिका शिक्षा के लिए कोई बालिका विद्यालय नहीं है। गांव में उच्च माध्यमिक विद्यालय है। विद्यालय में 412 छात्र – छात्राओं में 278 केवल छात्राएं अध्यनरत हैं। गांव में चिकित्सा व्यवस्था के लिए ग्राम पंचायत मुख्यालय पर उप स्वास्थ्य केन्द है। मरीजों को उदयपुरवाटी व गुहाला जाकर इलाज करवाना पड़ता है । वहीं गांव में पेयजल की बड़ी समस्या है । जिसके कारण लोगों को टैंकरों या दूरदराज से पीने का पानी लाना पड़ता है।

जनसंख्या-
जनसंख्या 5553
घर 1673
साक्षरता दर 56.9 प्रतिशत
वर्ष 2011 के अनुसार

उदयपुरवाटी. झुंझुनूं जिले के उदयपुरवाटी उपखंड मुख्यालय दस किलोमीटर दूरी पर स्थित रघुनाथपुरा गांव सेना में लेफ्टिनेंट जनरल, कर्नल और देश की रक्षा करते हुए बलिदान देने वाले शहीद दिए हैं। गांव के हर दूसरे घर में रिटायर्ड फौजी तो वर्तमान समय में हर दूसरे घर से एक या उससे अधिक सदस्य सेना में है। देश की रक्षा करते हुए गांव के शंकर सिंह शहीद हुए हैं। गांव के कर्नल जगन सिंह, कर्नल महेन्द्र रेपस्वाल सहित सैकड़ों लोगों ने सेना में सेवाएं दी है। वर्तमान समय गांव के कर्नल जगन सिंह के दो बेटे बसंत रेपस्वाल और कमल रेपस्वाल सेना में लेफ्टिनेंट जनरल के पद पर कार्यरत हैं। इसके अलावा गांव के सीए बने मनीष गोयल युगाण्डा में तो अंकित गोयल दुबई में कार्यरत है। धुड़ाराम चौधरी बीएसएनएल में एक्सइएन रह चुके है। रघुनाथपुरा में नेतराम की ढाणी, मुनका की ढाणी, पेमका की ढाणी, मादया की ढाणी आदि प्रमुख है। रघुनाथपुरा गांव स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के भवन का निर्माण गांव के जनसहयोग किया गया है।

निष्कर्ष

उदयपुर जिसे "झीलों का शहर" के नाम से भी जाना जाता है, भारत के राजस्थान राज्य में उदयपुर जिले का एक प्रमुख शहर, नगर निगम और प्रशासनिक मुख्यालय है। यह पूर्व राजपूताना एजेंसी में मेवाड़ राज्य की ऐतिहासिक राजधानी है। इसकी स्थापना 1559 में राजपूतों के सिसोदिया वंश के महाराणा उदय सिंह द्वितीय ने की थी, जब चित्तौड़गढ़ पर अकबर द्वारा घेराबंदी किए जाने के बाद उन्होंने अपनी राजधानी चित्तौड़गढ़ शहर से उदयपुर स्थानांतरित कर दी थी। यह 1818 तक राजधानी शहर के रूप में रहा, जब यह एक ब्रिटिश रियासत बन गया और उसके बाद 1947 में भारत के स्वतंत्र होने पर मेवाड़ प्रांत राजस्थान का हिस्सा बन गया। उदयपुर एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है और अपने इतिहास, संस्कृति, सुंदर स्थानों और राजपूत युग के महलों के लिए जाना जाता है। यह अपनी परिष्कृत झील प्रणाली के कारण "झीलों के शहर" के रूप में लोकप्रिय है। शहर के चारों ओर सात झीलें हैं। पांच प्रमुख झीलों, अर्थात् फतेह सागर झील, पिछोला झील, स्वरूप सागर झील, रंगसागर और दूध तलाई झील को भारत सरकार की राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना (एनएलसीपी) की बहाली परियोजना के तहत शामिल किया गया है।[८] झीलों के अलावा, उदयपुर अपने विशाल ऐतिहासिक किलों और महलों, संग्रहालयों, दीर्घाओं, प्राकृतिक स्थानों और उद्यानों, स्थापत्य मंदिरों के साथ-साथ पारंपरिक मेलों, त्योहारों और संरचनाओं के लिए भी लोकप्रिय है।

स्थलाकृति और जल निकासी

राहत संरचनाएं क्षेत्र की स्थलाकृतिक स्थितियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। जोधपुर जिले को तीन अलग-अलग भौगोलिक इकाइयों में विभाजित किया गया है, अर्थात् जलोढ़ मैदान। ढलान, रिज और रेत के टीले। जिले के पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भाग की विशेषता रेत के टीले हैं। जिले में कोई बारहमासी नदी नहीं है। हालाँकि, जिले में दो नदियाँ हैं यानी लूनी और मीथरी नदियाँ, लूनी नदी, जो बिलाड़ा के पास जिले में बहती है। वर्षा जल के अलावा सिंचाई का मुख्य स्रोत कुएँ और नलकूप हैं। जिले में उपलब्ध प्रमुख और महत्वपूर्ण खनिज हैं बलुआ पत्थर, चूना पत्थर, इमारती पत्थर, पत्थर की पटिया, फ्लैगस्टोन, विभिन्न रंगों के क्वार्ट्ज और मिट्टी, डोलोमाइट और लाल रंग का बलुआ पत्थर जोधपुर जिले का बहुत प्रसिद्ध है और प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।[6]

तापमान		
जनवरी	25.3	12.2
फ़रवरी	28.1	14.5
मार्च	31.7	19.3
अप्रैल	32.9	22.7
मई	32.5	24.1
जून	31.1	24.8
जुलाई	30.8	25.1
अगस्त	३१	25.2
सितम्बर	31.5	25.1
अक्टूबर	30.9	23.4
नवंबर	29	18.5
दिसंबर	26.4	13.7
वार्षिक	30.1	20.7

संदर्भ

[1] सुरजन सिंह शेखावत, प्रसिद्ध इतिहासकार

[2] डॉ॰उदयवीर शर्मा, इतिहासकार

[3] कर्नल जेम्स टोड

[4] एच.सी.बत्रा, M.A. इतिहास

[5] हेमिल्टन का हिन्दुस्थान भाग -१

[6] कर्नल जे.सी.ब्रुक